पावेल बन्या, बुल्गारिया
जुन २५, २००७

सन्देश संख्या ११६

बुल्गारिया से एक अपील

स्वभावतः जो एक अच्छा इंसान है, उसके लिए एक अच्छा क्रियावान होने का क्या अर्थ है?

कुछ लोग क्यों अपने तथाकथित आध्यात्मिक लक्ष्य की खोज में अपनी आन्तरिक सहजावस्था खो देते हैं और विभ्रान्त हो जाते हैं? क्या कोई आध्यात्मिक लक्ष्य हो सकता है? क्या वह लक्ष्य, अध्यात्म की आड़ में केवल महिमामण्डित लोभ नहीं है? क्या उसमें कोई अध्यात्म है? क्या यह विभेदकारी चित्तवृत्ति ''मैं'' ही नहीं है जो अध्यात्म के नाम पर स्वयं को निरन्तरता और स्थायित्व देने के लिए हर सम्भव प्रयास कर रहा है?

एक अच्छा इंसान होने का क्या अर्थ है? क्या कोई कृत्रिम अच्छाई हो सकती है? अध्यात्म की आड़ में सत्ता की लालसा को क्या अच्छा माना जा सकता है? दूसरों को नियन्त्रित करने या प्रभावित करने में कौन–सी तुष्टि मिलती है? प्रतिक्रिया और अप्रसन्नता, दर्प और आक्रामकता तथा पूर्वानुमान और संशय में होने वाला मन क्यों हमेशा जीवन की जीवन्तता का नाश करता है? क्या यह सम्भव है कि चेतना में विभाजन अर्थात् ''मैं'' का लय हो जाय? ताकि परम पवित्र चैतन्य को उपलब्ध हुआ जा सके जिससे मनुष्य जुड़ा तो जन्म से ही है किन्तु ''मैं'' के कारण वह सुप्तावस्था में है । क्या केवल तथ्यात्मक पंजीकरण के साथ जीवन जीना सम्भव है जहाँ एक भी मानसिक पंजीकरण न हो ? क्या यह सम्भव है कि व्यक्ति जब वस्तुतः जानता न हो तो वह जानने का ढोंग न करे? तकनीकी क्षेत्र की जानकारियों को छोड़कर उधार में प्राप्त अन्य जानकारियों एवं विश्वासों से मुक्त होना क्या सम्भव है? क्या बिना किसी विभाजन के अर्थात् बिना किसी गुप्त या अप्रत्यक्ष उद्देश्य के कोई भी कार्य करना सम्भव है?

उत्तर पाने की शीघ्रता न करते हुए उपर्युक्त प्रश्नों के साथ धैर्यपूर्वक गहन मनन की अवस्था में रहना ही क्रियायोग–जीवन की शुरूआत है । इसे ही स्वाध्याय के नाम से जाना जाता है और यही प्राचीन मानवता की सांख्य–प्रज्ञा का सार–तत्व भी है । इस स्वाध्याय के बिना केवल क्रिया–अभ्यास व्यक्ति को अपवित्र, कलुषित और जड़ मूर्ख बना देता है । ऐसा व्यक्ति जो स्वयं के बारे में आध्यात्मिक होने तथा बहुत अधिक ''आध्यात्मिक ज्ञान'' वाला होने का दावा करता है, उसका क्रियावानों के बीच रहना खतरनाक है क्योंकि वह मानसिक–प्रदूषणों तथा विकृत प्रतिक्रियाओं के प्रसार द्वारा क्रियावानों की पवित्रता एवं समझदारी को न कर पूरे समूह को गर्हित बना सकता है ।

यह संदेश शिवेन्दुजी के मार्गदर्शन में क्रियायोग की वंश परम्परा से जुड़े बुल्गारियावासी शिष्यों का इसी परम्परा से जुड़े विश्व के अन्य क्रियावानों से अपील है कि वे सदा सजग रहें तथा सेव की टोकरी से एक सड़े सेव की तरह प्रदूषित क्रियावान को शीघ्रातिशीघ्र बाहर कर दें । हमलोगों ने बुल्गारिया में ऐसा ही किया है । हमलोग इस जानकारी को सम्पूर्ण विश्व के अपने क्रियावान भाई–बहनों से साझा करना चाहते हैं ताकि स्वाध्याय के रूप में समझदारी की क्रिया–ऊर्जा तथा पवित्र क्रिया अभ्यास बिना किसी गतिरोध के सर्वत्र जारी रहे ।

किसी शिष्य द्वारा वेबसाइट पर डाला गया यह द्वितीय सन्देश है । सन्देश संख्या २१ ऐसा प्रथम सन्देश है और भारत के श्री गोपी मेनन ने उसे सुन्दर रूप में प्रस्तुत किया है । इस सन्दर्भ में भारत के बाद दूसरा देश होने के कारण बुल्गारिया खुश है । बुल्गारियावासी क्रियावान वर्तमान में आनन्दमग्न हैं क्योंकि शिवेन्दुजी अभी उनके बीच हैं ।

।। जय बुल्गारिया ।।